अबाबील का स्वादिष्ट घोंसला

नरेन्द्र देवांगन

विश्व का सबसे महंगा पक्षी उत्पाद क्या है? इस प्रश्न का उत्तर देना वास्तव में कठिन है। सही उत्तर है, अबाबील जाति के एक विशिष्ट पक्षी का घोंसला, जिसकी सिंगापुर तथा हांगकांग के बाज़ारों में कीमत लगभग डेढ़ लाख रुपए प्रति किलोग्राम है। अमरीका के बाज़ारों में तो इसकी कीमत चार लाख रुपए प्रति किलोग्राम तक पहुंच जाती है।

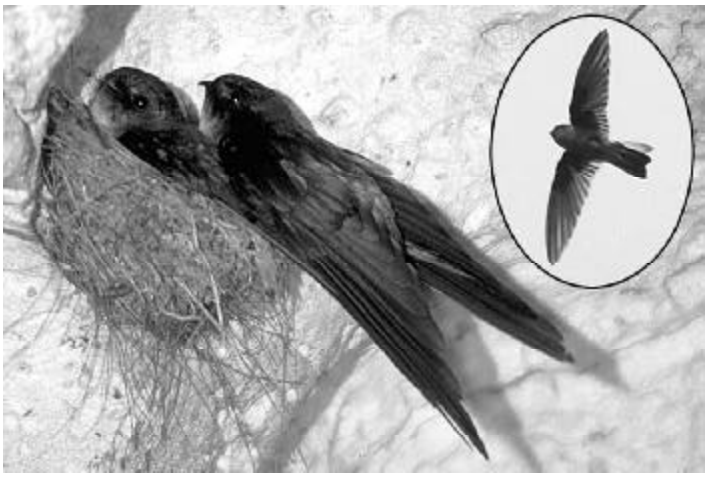

यह घोंसला पक्षी अपनी लार से बनाता है और उससे भी विचित्र बात यह है कि इस अबाबील के घोंसले का सूप बनाया जाता है जिसे चीनी लोग सबसे महंगा मानते हैं। यही वजह है कि इसका व्यापार हर साल अरबों डॉलर में होता है। महंगे चीनी रेस्तरां तथा अमीर लोगों के घरों में भोजन के साथ विशेष अवसरों पर इससे बने सूप का सेवन किया जाता है। चीन, थाईलैंड, इंडोनेशिया, वियतनाम, मलेशिया तथा दक्षिण-पूर्व एशिया के कुछ अन्य देशों में इन घोंसलों का इतने व्यापक पैमाने पर दोहन किया जाता है कि अब इस पक्षी का अस्तित्व ही खतरे में पड़ गया है। तो क्या हैं ये पक्षी के घोंसले और कैसे होता है इनका दोहन?

ये घोंसले अबाबील जाति के एक खास पक्षी द्वारा बनाए जाते हैं जिन्हें अंग्रेज़ी में 'केव स्विफ्टलेट' और जीव विज्ञान की भाषा में *कैलोकेलिया फ्रैंसीसिया* कहते हैं। इन्हें इंडोनेशिया में 'वैलेट' तथा थाई भाषा में 'नोक एन किन रैंग' कहते हैं। ये पक्षी ज़्यादातर वियतनाम, थाईलैंड, इंडोनेशिया, मलेशिया, चीन, म्यांमार, श्रीलंका, फिलीपिन्स और उत्तर-पूर्वी ऑस्ट्रेलिया में पाए जाते हैं। हमारे देश में ये पक्षी अंडमान निकोबार द्वीपों और उत्तर-पूर्वी राज्यों में पाए जाते हैं।

ये अबाबील हल्के स्लेटी व भूरे रंग के होते हैं। इनका आकार छोटा होता है। ये लगातार वायु में उड़ते हुए कीड़ों को पकड़ते रहते हैं। अबाबील की पूंछ छोटी तथा नाक व पंख लंबे व पतले होते हैं। इनके पैर बहुत छोटे तथा पंजे मुड़े हुए होने के कारण ये न तो चल सकते हैं और न ही बैठ सकते हैं। इसीलिए अबाबील अपना सभी कार्य उड़ते हुए अथवा लटककर करते हैं, यहां तक कि प्रजनन भी।

अबाबील के बारे में वैज्ञानिकों का विचार है कि ये भी अपना रास्ता खोजने के लिए चमगादड़ों की तरह प्रतिध्वनि का सहारा लेते हैं। इसी कारण ऊंची-ऊंची गुफाओं के घोर अंधेरे में भी ध्वनि की मदद से अपना रास्ता ढूंढ लेते हैं। घोंसला बनाने के लिए नर अबाबील अपनी लार का इस्तेमाल करता है। यह लार शीघ्र सूखकर सीमेंट की तरह कठोर हो जाती है।

अबाबील हज़ारों की संख्या में अपने घोंसले किसी निर्जन स्थान पर, ऊंची अंधेरी गुफाओं की छतों पर या किसी ऊंचे स्थान पर बनाते हैं जहां आम लोगों के लिए पहुंचना लगभग नामुमकिन होता है। इसके बावजूद घोंसलों के लोभी सैकड़ों फुट ऊंची गुफाओं में बांस तथा बेंत से बनाई गई सीढ़ियां लगाकर घोंसलों तक पहुंचते हैं तथा उन्हें तोड़कर जमा करते हैं। इस काम को बड़ी-बड़ी कंपनियां

करवाती हैं, जिनका इन घोंसलों पर एकाधिकार रहता है।

वैसे तो अबाबील पक्षियों की अनेक प्रजातियां होती हैं किंतु इनमें केवल उन्हीं की मांग रहती है जो अपना घोंसला लार से बनाते हैं। दूसरी प्रजातियों के अबाबील अपना घोंसला टहनियों, पत्तियों, घास-फूस तथा कीचड़ से बनाते हैं। उन्हें बेकार मानकर वहां से भगा दिया जाता है। लार से घोंसला बनाने वाले अबाबील को दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों में 'नेस्ट सूप स्विफ्टलेट' कहते हैं। इनकी दो किस्में हैं। एक के घोंसले सफेद होते हैं, दूसरे के काले। सफेद घोंसले बेहतर माने जाते हैं और सोने के भाव बिकते हैं।

घोंसलों का सूप बनाकर पीने की परंपरा चीन में सदियों पुरानी है। कहा जाता है कि चीन के तांग राजवंश के युग में इसकी शुरुआत हुई थी। चीन, हांगकांग, ताइवान तथा सिंगापुर के बाज़ारों में इस उत्पाद की खूब मांग है। यद्यपि चीन में कम्युनिस्ट प्रभुत्व के समय से घोंसले के सेवन पर तगड़ा प्रतिबंध लगा है। लेकिन जब से चीन में साम्यवादी प्रभाव कुछ कम हुआ है इसके व्यापार में तेज़ी आई है। अब अकेले हांगकांग में हर साल लगभग 100 टन घोंसलों का आयात किया जाता है।

सूप तैयार करने के लिए घोंसलों को पहले रात भर ठंडे पानी में भिगोकर रखा जाता है। इसके बाद उन पर चिपके हुए पंखों, टहनियों तथा अन्य वस्तुओं को अलग कर दिया जाता है। फिर उन्हें गरम पानी से धोया जाता है। इस प्रकार साफ किए हुए घोंसले को पानी में उबाला जाता है और कुछ मसाले डाले जाते हैं। इसके अलावा इसमें मांस के छोटे-छोटे टुकड़े भी डाले जाते हैं।

हांगकांग विश्वविद्यालय के बायोकेमेस्ट्री के प्रोफेसर कांग युनचेन ने इस सूप का विश्लेषण किया तो पाया कि उसमें जल में घुलनशील ग्लाइकोप्रोटीन मौजूद थे जो शरीर के प्रतिरक्षा तंत्र में कोशिकाओं के विभाजन में सहायक होते हैं। लेकिन सफाई के दौरान ये नष्ट हो जाते हैं। इस कारण इस सूप का पौष्टिक महत्त्व कम हो जाता है। दूसरी तरफ चीनी मान्यता है कि अबाबील के घोंसले का सूप अत्यंत स्वास्थ्यवर्धक, पौष्टिक, यौवनवर्धक, प्रोटीनयुक्त तथा कफ और खांसी दूर करने वाला होता है। विश्वास है कि इसके सेवन से भूख बढ़ती है, कमज़ोरी दूर होती है और गर्भवती स्त्रियां सुंदर और गोरे बच्चों को जन्म देती हैं।

अबाबील प्रजनन के उद्देश्य से फरवरी-मार्च के महीनों में घोंसले बनाने की शुरुआत करते हैं जो लगभग एक माह में बन कर तैयार हो जाता है। घोंसला तश्तरी के आकार का होता है। उसके बाद मादा अबाबील अंडे देती हैं। लगभग 3 सप्ताह में अंडों से बच्चे निकलते हैं जिनके बड़े होने में लगभग एक माह लगता है। यह सारी प्रक्रिया जुलाई-अगस्त तक पूरी हो जाती है और घोंसले खाली हो जाते हैं, जिन्हें निकाला जा सकता है। यदि अंडे देने से पहले ही शिकारियों द्वारा घोंसला निकाल लिया जाता है तो मादा लगभग 20 दिन में एक दूसरा घोंसला तैयार कर लेती है, किंतु यह घोंसला निम्न कोटि का बनता है। अब यदि इस घोंसले को भी हटा दिया जाए तो मादा तीसरा घोंसला केवल 15 दिन में बना लेती है जो और भी घटिया होता है।

दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों में इन घोंसलों का अंधाधुंध शिकार किया जा रहा है। यही नहीं अधिकतर शिकारी एक वर्ष में कई बार घोंसले निकालते हैं, इसके अलावा उन घोंसलों को निकालते समय यह भी ध्यान नहीं रखते हैं कि उनके अंदर पक्षियों के अंडे तथा बच्चे भी हैं, जो घोंसले निकालते समय नष्ट हो जाते हैं। घोंसलों पर आघात से इन पक्षियों की संख्या निरंतर घटती जा रही है। यदि इनके दोहन का सिलसिला इसी तरह चलता रहा तो 15-20 सालों में अबाबील का अस्तित्व ही मिट जाएगा।

वैसे इन घोंसलों को निकालना इतना आसान नहीं है। सैकड़ों फुट ऊंची सीढ़ियां तथा मचान तैयार किए जाते हैं जिन पर चढ़कर शिकारी घोंसले तक पहुंचते हैं। इस प्रयास में अनेक दुर्घटनाएं भी होती हैं तथा अनेक शिकारी ऊंचाई से गिर जाते हैं।

हांगकांग तथा चीन में, जहां अबाबील के घोंसलों की ज़्यादा मांग है, इनका आयात किया जाता है। सबसे अधिक आयात इंडोनेशिया से होता है। इसके बाद क्रमशः थाईलैंड, वियतनाम, सिंगापुर, म्यांमार का नंबर आता है। अकेले थाईलैंड में इन घोंसलों का अरबों रुपए का व्यापार है जो अधिकतर एक या दो चीनी मूल के परिवारों तक सीमित है।

थाईलैंड के 'कोह सी कोह हा' नामक द्वीपों पर स्थित गुफाओं में इन पक्षियों के बड़े-बड़े बसेरे हैं। इनको निकालने का ठेका 'रैंग नोक लैमथांग' कंपनी को दिया गया है जिसके पास थाईलैंड के 4 और प्रांतों का ठेका है। कंपनी हर साल थाई सरकार को करोड़ों का टैक्स देती है।

कुछ देशों में इन पक्षियों के कृत्रिम संवर्धन के प्रयास किए गए हैं। इसके लिए ऊंचे-ऊंचे मकान के ढांचे बनाकर जंगली अबाबीलों को आकर्षित किया जाता है ताकि वे वहां अपना घोंसला बना सकें। कभी-कभी दूसरी प्रजाति के अबाबीलों के घोंसलों में वांछित प्रजाति के अबाबीलों के अंडे रख दिए जाते हैं ताकि उनसे निकले हुए बच्चे जब बड़े होकर अपना घोंसला बनाएं तो उन्हें व्यवसाय के लिए इस्तेमाल किया जाए। वैसे अभी इन अबाबीलों को लुप्त प्राय जीवों की श्रेणी में नहीं रखा गया है। किंतु यदि इस व्यवसाय पर नियंत्रण नहीं किया गया तो अबाबील पक्षी शायद आकाश में न नज़र आएं। ***(स्रोत फीचर्स)***